मुद्रा का महत्त्व अथवा भूमिका
(Significance or Role of Money)

राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के परिचालन में मुद्रा अत्यधिक महत्त्व रखती है। किसी भी व्यक्ति के दैनिक जीवन में—चाहे वह उपभोक्ता हो, चाहे उत्पादक, चाहे व्यापारी, चाहे विद्वान, चाहे राजनीतिज्ञ, चाहे प्रशासक हो—मुद्रा बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। "यह जानने के लिए कि मुद्रा आधुनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण कार्य करती है, मनुष्य को अर्थशास्त्री होने की जरूरत नहीं है; उसे केवल अनुभव के बारे में सोचने की जरूरत है।"[1]

1. मुद्रा की भूमिका का सामाजिक महत्त्व
(SOCIAL SIGNIFICANCE OF ROLE OF MONEY)

अपने स्थैतिक और गत्यात्मक कार्यों के कारण एक अर्थव्यवस्था के लिए मुद्रा का बहुत महत्त्व है। इसके स्थैतिक कार्य परंपरागत अथवा स्थैतिक कार्यों से उत्पन्न होते हैं।[2] अपने गत्यात्मक कार्य में मुद्रा प्रत्येक शहरी के जीवन में और पूरी आर्थिक प्रणाली में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

मुद्रा का स्थैतिक कार्य (Static Role of Money)

अपने स्थैतिक कार्य में, मुद्रा का महत्त्व वस्तु-विनिमय की कठिनाइयों को निम्न ढंगो से दूर करने में है—

1. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग दूर करना (To Remove Double Coincidence of Wants)—विनिमय के माध्यम का काम करने से मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की जरूरत तथा वस्तु-विनिमय प्रणाली से संबद्ध असुविधाओं एवं कठिनाइयों को समाप्त करती है। मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में चलाने से वस्तु-विनिमय के अकेले लेन-देन को क्रय और विक्रय के अलग-अलग लेन-देन में कर दिया जाता है, जिससे आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या समाप्त हो जाती है। वस्तुओं की वस्तुओं के साथ सीधी अदला-बदली करने, अर्थात $C \leftrightarrow C$ की बजाय, वस्तुओं का मुद्रा के साथ विनिमय किया जाता है और मुद्रा आगे अन्य वस्तुओं को खरीदती है, जैसे $C \rightarrow M \rightarrow C$, जहां C वस्तुएं हैं और M मुद्रा।

2. मूल्य के सामान्य माप के रूप में (As a Common Measure of Value)—मूल्य की इकाई

1. Lester Vs. Chandler and S. M. Goldfield, *op. cit,*
2. इस खण्ड में व्याख्या "मुद्रा के स्थैतिक और गत्यात्मक कार्यों से भी संबंध है।

Scanned with CamScanner

के रूप में कार्य करते हुए, मुद्रा मूल्य का सामान्य माप बन जाती है। मूल्य के मानक के रूप में मुद्रा का प्रयोग करने से कि सेबों की कीमत संतरों में और संतरों की कीमत चावल में बताने की जरुरत नहीं रहती। मुद्रा मूल्य को मापने का मानक है और मूल्य को मुद्रा में व्यक्त करना कीमत है। भिन्न वस्तुओं की कीमतों को डालर, रुपये, पाउण्ड आदि की इकाइयों में व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार वस्तुओं की कीमतों को एक देश की मुद्रा इकाई के अनुसार मापा जाता है। वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य उस देश की मुद्रा इकाई में मापने से बाजार में उनका विनिमय मूल्य मापना आसान हो जाता है।

3. स्थगित भुगतानों के मानक के रूप में (As a Standard of Deferred Payments)—वस्तु-विनिमय प्रणाली में भेड़ या गेहूँ के रूप में कर्जा लेना आसान था, परन्तु इस प्रकार की नाशवान वस्तुओं का भविष्य में पुनर्भुगतान करना कठिन होता था। मुद्रा ने कर्जे लेना और कर्जों का पुनर्भुगतान करना दोनों को आसान बना दिया है क्योंकि मुद्रा टिकाऊ है। वस्तुओं की अविभाज्यता को भी मुद्रा दूर करती है।

4. मूल्य संचय के रूप में (As a Store of Value)—मूल्य के संचय का कार्य करते हुए मुद्रा वस्तु-विनिमय में वस्तुओं को स्टोर करने की समस्या को हल करती है। मुद्रा एक बहुत तरल संपत्ति है, जिसे बहुत लंबे समय तक बिना खराब, नष्ट या हानि हुए रखा जा सकता है।

5. मूल्य के हस्तांतरण के रूप में (As a Transfer of Value)—वस्तु-विनिमय में पशुओं, चावल आदि के रूप में मूल्य का एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरण करना कठिन होता था। मुद्रा, मूल्य को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरण करने की सुविधा प्रदान करके वस्तु-विनिमय की इस कठिनाई को भी दूर करती है। एक व्यक्ति ड्राफ्ट, विनिमय-पत्र, चैक आदि के द्वारा अपनी मुद्रा हस्तांतरित कर सकता है। वह अपनी परिसंपत्तियों को एक स्थान पर नकदी में बेचकर दूसरे स्थान पर खरीद सकता है।

मुद्रा का गत्यात्मक कार्य (Dynamic Role of Money)

अपने गत्यात्मक कार्य में मुद्रा एक व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करती है और अर्थव्यवस्था को अनेक प्रकार से प्रभावित करती है—

1. उपभोक्ता के लिए (To the Consumer)—उपभोक्ता के लिए मुद्रा का बहुत महत्त्व है। उपभोक्ता को अपनी आय वस्तुओं तथा सेवाओं के रूप में नहीं अपितु मुद्रा में प्राप्त होती है। मुद्रा हाथ में रहने पर वह जब और जितनी मात्रा में जरूरत पड़ने पर अपनी मर्जी की वस्तु अथवा सेवा खरीद सकता है। जैसा प्रो. राबर्ट्सन ने लक्ष्य किया है, ''मुद्रा से मनुष्य, उपभोक्ता के रूप में, अपनी क्रयशक्ति का सामान्यीकरण कर सकता है और अपने अधिकतम अनुकूल बैठने वाले ढंग से समाज पर अपने अधिकार प्रकट कर सकता है।''[1] इतना ही नहीं, अपितु मुद्रा उपभोक्ता की सीमान्त उपयोगिताओं को बराबर करने का कार्य भी करती है। उपभोक्ता का प्रमुख उद्देश्य यह होता है कि वह जिन विभिन्न वस्तुओं को खरीदना चाहता है उन पर अपनी सीमित आय को ऐसे ढंग से खर्च करे ताकि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो। क्योंकि वस्तुओं की कीमतें उनकी सीमान्त उपयोगिताओं को प्रकट करती हैं और कीमतें मुद्रा में व्यक्त की जाती हैं, इसलिए मुद्रा वस्तुओं की सीमांत उपयोगिताओं को समान बनाने में सहायक होती है। ऐसा करने के लिए अधिक उपयोगिता वाली वस्तुओं को कम

1. D. H. R...

Scanned with CamScanner

उपयोगिता वाली वस्तुओं से स्थानापन्न किया जाता है। इस प्रकार मुद्रा के द्वारा उपभोक्ता अपनी मर्जी की विविध वस्तुओं पर अपनी आय को उपयुक्त ढंग से वितरित कर सकता है।

2. उत्पादक के लिए (To the Producer)—उत्पादक के लिए भी मुद्रा उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी उपभोक्ता के लिए। वह अपने आगतों तथा निर्गतों के मूल्य का हिसाब मुद्रा में रखता है। वह जितना कच्चा माल खरीदता है, वर्करों को जो मजदूरी का भुगतान करता है, जो पूंजी उधार लेता है, जो किराया देता है, विज्ञापन पर जो खर्च करता इत्यादि सभी उत्पादन के खर्चे हैं जिन्हें वह अपनी बहियों में दर्ज करता है। वस्तुओं को बेचकर प्राप्त होने वाली मुद्रा उसकी बिक्री है। दोनों में जो अन्तर हो वह उसका लाभ (या हानि) होगा। इस प्रकार उत्पादक मुद्रा की सहायता से अपनी उत्पादन की लागतों और प्राप्तियों का ही हिसाब नहीं लगाता, बल्कि अपने लाभों का भी हिसाब लगाता है।

फिर मुद्रा अर्थव्यवस्था के कृषि, औद्योगिक तथा तृतीयक क्षेत्रों से वस्तुओं तथा सेवाओं के सामान्य प्रवाह में भी सहायक होती है, क्योंकि ये सभी क्रियाएं मुद्रा के माध्यम से ही होती हैं। जैसा कि प्रो. राबर्ट्सन ने लक्ष्य किया है, "मुद्रा की सहायता से मनुष्य उत्पादन के रूप में अपने कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता है और इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य प्रवाह को प्रभावशाली ढंग से बढ़ा सकता है। वस्तुएं और सेवाएं ही समाज की आय हैं। *(इसलिए उत्पादक समाज की आय बढ़ा सकता है।)*"[1]

3. श्रम के विशिष्टीकरण तथा विभाजन में (In Specialisation and Division of Labour)—मुद्रा आधुनिक उत्पादन में बड़े पैमाने पर विशिष्टीकरण तथा श्रम के विभाजन में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। "यदि प्रत्येक व्यक्ति उन उत्पादनों को अपने उद्योग के लिए जरूरी सामग्री और अपने उपभोग के लिए जरूरी वस्तुएं वस्तु-विनिमय करने में अपना अधिकांश समय और शक्ति लगाता रहे, तो विशिष्टीकरण और श्रम का वह विभाजन असम्भव हो जाएगा जिस पर हमारा आर्थिक ढांचा टिका हुआ है।" मुद्रा की सहायता से पूंजीपति श्रम के विभाजन के आधार पर विशिष्ट कार्यों में संलग्न बहुत से वर्करों को भुगतान करता है। जिस प्रकार का कार्य प्रत्येक वर्कर करता है उसके हिसाब से उसे मुद्रा में मजदूरी दी जाती है। इस प्रकार, मुद्रा आधुनिक उत्पादन में विशिष्टीकरण और श्रम के विभाजन को आसान बनाती है। इससे आगे, उद्योगों की वृद्धि में सहायता मिलती है।

वास्तव में, बड़े पैमाने पर उत्पादन मुद्रा के माध्यम से ही सम्भव है। सभी प्रकार के आगत जैसे कच्चा माल, श्रम मशीनरी इत्यादि मुद्रा से खरीदे जाते हैं और सभी निर्गत मुद्रा के बदले बेचे जाते हैं। प्रो. पीगू ने ठीक ही लक्ष्य किया है, "आधुनिक जगत् में उद्योग पूर्णतया मुद्रा के वस्त्र में लिपटा है।"[2] **(In the modern world, industry is closely folded in a garment of money)**

4. साख के आधार के रूप में (As a Basis of Credit)—समस्त आधुनिक व्यापार साख पर आधारित है और साख मुद्रा पर आधारित है। मुद्रा के सभी लेन-देन चैकों, ड्राफ्टों, हुंडियों आदि के माध्यम से होते हैं। ये साख के साधन हैं जो अपने आय में मुद्रा नहीं हैं। बैंक जमा ही मुद्रा होती है। बैंक इस तरह के साख के साधन जारी करते हैं और साख का निर्माण करते हैं। साख का निर्माण आगे निधियों को जमाकर्त्ताओं से निवेशकर्त्ताओं तक हस्तान्तरण करने में प्रमुख कार्य करता है। इस प्रकार साख, बैंक जमाओं के रूप में विद्यमान सार्वजनिक बचतों के आधार पर, निवेश का विस्तार करती है

---

1. वही। तिरछे शब्द प्रस्तुत लेखक के है।
2. A. C. Pigou, *Industrial Fluctuations*, p. 117.

Scanned with CamScanner

और अर्थव्यवस्था के भीतर आय के चक्रीय प्रवाह को बनाए रखने में सहायक होती है।

5. पूंजी निर्माण के साधन के रूप में (As a means to Capital Formation)—जो ऊपर कहा गया है उससे सीधा नतीजा यह निकलता है कि मुद्रा पूंजी निर्माण का साधन है। मुद्रा तरल परिसम्पत्ति है जिसे संग्रह किया जा सकता है और मुद्रा संग्रह करने का मतलब है बचतें और बचतें ब्याज अर्जित करने के लिए बैंक में जमा कराई जाती हैं। बैंक इन बचतों को आगे पूंजी पदार्थों में निवेश के लिए व्यापारियों को देता है ताकि वे विभिन्न स्रोतों और स्थानों से कच्चा माल खरीद सकें। इससे पूंजी गतिशील बनती है जिससे पूंजी निर्माण और आर्थिक वृद्धि होती है।

6. आर्थिक वृद्धि की सूचक के रूप में (As an Index of Economic Growth)—वास्तव में, मुद्रा पूंजी निर्माण का ही साधन नहीं है अपितु आर्थिक वृद्धि की सूचक भी हैं। राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय तथा आर्थिक कल्याण वृद्धि के सूचक है। मुद्रा के रूप में ही इनका हिसाब लगाया जाता है और मुद्रा के रूप में ही इन्हें मापा जाता है। मुद्रा के मूल्य अथवा कीमतों में होने वाले परिवर्तन भी किसी अर्थव्यवस्था की वृद्धि को प्रकट करते हैं मुद्रा के मूल्य में कमी होने (अथवा कीमतों के बढ़ने) का मतलब है कि अर्थव्यवस्था सही अर्थों में प्रगति नहीं कर रही है। दूसरी ओर मुद्रा के मूल्य में निरन्तर वृद्धि (अथवा कीमतों का गिरना) अर्थव्यवस्था की गिरावट को प्रकट करता है। कुछ-कुछ स्थिर कीमतों से पता चलता है कि अर्थव्यवस्था वृद्धि के पथ पर अग्रसर है। इस प्रकार मुद्रा आर्थिक वृद्धि की सूचक है।

7. आय के वितरण और गणना में (In the Distribution and Calculation of National Income)—आधुनिक अर्थव्यवस्था में उत्पादन के विविध साधनों के पुरस्कारों का भुगतान मुद्रा में किया जाता है। मजदूर को मजदूरी मिलती है, पूंजीपति को ब्याज मिलता है, भूमिपति को किराया और उद्यमी को लाभ मिलता है। पर इन सबको इनका पुरस्कार मुद्रा में प्राप्त होता है। संगठनकर्त्ता प्रत्येक साधन की सीमान्त उत्पादकता का हिसाब मुद्रा में लगाता है और उसके अनुसार भुगतान कर सकता है। इसके लिए वह प्रत्येक साधन की कीमत से उसकी सीमान्त उत्पादकता को बराबर करता है। साधन की कीमत, वास्तव में, उसकी मुद्रा के रूप में व्यक्त सीमान्त उत्पादकता है। क्योंकि उत्पादन के विविध साधनों का मुद्रा में भुगतान किया जाता है, इसलिए राष्ट्रीय आय का हिसाब लगाना आसान हो जाता है।

8. राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में (In National and International Trade)—मुद्रा, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को सुविधाजनक बनाती है। विनिमय के माध्यम, मूल्य के भंडार तथा मूल्य के हस्तांतरण के रूप में मुद्रा का प्रयोग होने से केवल देश के भीतर ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय रूप से भी वस्तुओं का विक्रय संभव हो गया है। व्यापार को सुगम बनाने के लिए मुद्रा एवं पूंजी बाजार स्थापित करने में मुद्रा सहायक हुई है। बैंक, वित्तीय संस्थाएं, शेयर बाजार, मंडियाँ, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं आदि, मुद्रा अर्थव्यवस्था के आधार पर चलती हैं और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में सहायता देती हैं।

फिर, विभिन्न देशों में व्यापार सम्बन्ध स्थापित होने से अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता बढ़ी है। परिणामतः, अल्पविकसित देशों को ऋण और तकनीकी सहायता देकर विकसित देश उनकी संवृद्धि में सहायक होते रहे हैं। यह इसलिए संभव हो सका कि विकसित देशों से प्राप्त विदेशी सहायता और उसके पुनर्भुगतान का मूल्य मुद्रा में मापा जाता है।

Scanned with CamScanner

9. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्यायें सुलझाने में (In Solving the Central Problems of an Economy)—मुद्रा अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं सुलझाने में सहायक होती है : जैसे किस चीज का उत्पादन किया जाए, किसके लिए उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाए, और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए। इसका करण यह है कि मुद्रा अपने कार्यों के आधार पर उपभोक्ताओं, उत्पादकों और सरकार के बीच वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह को सुगम बना देती है। जैसा कि प्रो. **राबर्टसन** ने लक्ष्य किया है, "यदि मुद्रा अर्थव्यवस्था विद्यमान है, तो समाज यह पता लगा सकता है कि लोगों को किस चीज की और कितनी चीज की जरूरत है। इसलिए समाज यह निर्णय कर सकता है कि किस चीज का और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए और इस प्रकार समाज अपनी सीमित उत्पादक शक्ति का अधिकतम लाभ उठा सकता है।"[1]

10. सरकार के लिए (To the Government)—सरकार के लिए मुद्रा का बहुत ही महत्त्व है। मुद्रा करों, जुर्मानों, फीसों और सरकार द्वारा लोगों को प्रदान की गई सेवाओं की कीमतों की वसूली को सुगम बना देती है। यह सार्वजनिक ऋणों को जारी करने, उनका प्रबन्ध करने, और विकास-तथा-विकासेतर कार्यों पर सरकारी खर्च को सरल बना देती है। आधुनिक सरकारों के लिए मुद्रा के बिना अपने कार्य चलाना असम्भव हो जाएगा। इससे बड़ी बात यह है कि आधुनिक सरकारें कल्याणकारी राज्य हैं। उनका लक्ष्य गरीबी हटाकर, असमानताएं और बेरोजगारी दूर करके और स्थिरतापूर्वक वृद्धि लाकर लोगों का जीवन-स्तर सुधारना है। मुद्रा अपने विभिन्न साधनों के माध्यम से आर्थिक नीति के इन उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता देती है। इस सम्बन्ध में पीगू ने लिखा है, "मुद्रा-संस्था...सम्पत्ति और कल्याण को बढ़ावा देने का सशक्त साधन है...सम्पत्ति और संविदा के नियमों की भांति यह कम-से-कम एक ऐसा बहु-उपयोगी स्नेहक (lubricant) है जिससे आर्थिक मशीन लगातार और बिना रुकावट के काम करती रह सकती है।"

11. समाज के लिए (To the Society)—मुद्रा कई सामाजिक लाभ प्रदान करती है। मुद्रा के आधार पर ही समाज में साख का उच्च ढांचा निर्मित होता है जो उपभोग, उत्पादन, विनिमय और वितरण को सरल बनाता है। जब देश के कोने-कोने में लोग एक ही मुद्रा का प्रयोग करते हैं, तो इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है। मुद्रा लोगों के सामाजिक जीवन के लिए स्नेहक का कार्य करती है और भौतिक प्रगति के चक्रों को चिकनाती है। मुद्रा सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनैतिक शक्ति का आधार है। प्रो. **डेवन पोर्ट** का मत है, "लगभग सभी बड़े राजनीतिक प्रश्न और अन्तर्राष्ट्रीय जटिलताएं मुद्रा मानक पर ही टिकी हैं।"[2]

Scanned with CamScanner